1.

# Short Notes - Main point

इतिहास विभाग

M.A. Sem- II

(2018 - 2020)

I Paper

वैदिक सभ्यता

वैदिक सभ्यता (1500 - 600 B.C)

ऋग्वैदिक काल (1500 - 600 B.C) | उत्तर वैदिक काल (1000 - 600 B.C)

जानकारी के स्रोत :- वैदिक काल के जानकारी का मुख्य स्रोत वेद एवं उससे जुड़े दुए ग्रंथ हैं।

- वेद चार हैं जो क्रमशः ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद तथा अथर्ववेद है।
- इनमें ऋग्वेद काल की जानकारी का स्रोत ऋग्वेद है, इसमें 10 मंडल और 1028 सूक्त है।

→ युर्जवेद :- यह उत्तर वैदिक काल की रचना है इसमें विभिन्न प्रकार के यज्ञ और उससे जुड़े मंत्र हैं। इसकी शैली गद्यात्मक है। यह वायु को समर्पित है।

→ सामवेद :- इसकी शैली गद्यात्मक है। यह सूर्य को समर्पित है। इसी से भारतीय संगीत की उत्पत्ति मानी जाती है।

अथर्ववेद :– इसकी शैली गद्य-पद्य मिश्रित है। इसमें जादू टोना, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, रीतिरिवाज इत्यादि का वर्णन है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, एवं सामवेद को "वेद त्रयी" भी कहते हैं।

वैद वेद :– ब्राह्मण → आरण्यक → उपनिषद्

⇒ उत्तर वैदिक संस्कृति (1000 – 600 B.C)

– उत्तर वैदिक काल में पूर्व की तरफ आर्यों का विस्तार होता है। इस समय आर्यों की गतिविधि का मुख्य केन्द्र गंगा-यमुना का दोआब था।

⇒ राजनैतिक व्यवस्था :– कृषि प्रधान व्यवस्था, कबायली व्यवस्था में दरार, वर्ण-व्यवस्था का जन्म, क्षेत्रगत साम्राज्यों का उदय, लौह उपकरण के प्रमाण मिलते हैं।

⇒ राजा :– राजा की भूमिका में बदलाव के संकेत मिलते हैं। राजा न केवल कबीले का प्रमुख बल्कि उस क्षेत्र का भी प्रमुख होता था जहाँ कबीले लोग निवास करते हैं/थे। कई प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों के द्वारा राजपद को स्थायी बनाया गया और राजा का पद पूर्णत: वंशानुगत होने लगा।

⇒ प्रशासनिक इकाई :– प्रशासन की सर्वोच्च इकाई जनपद थी।

जनपद → विश → ग्राम → परिवार

⇒ राजनैतिक संस्थाएँ :– समिति के महत्व में कमी आयी तथा सभा के महत्व में वृद्धि हुई। परंतु सभा के सदस्यों की नियुक्ति राजा द्वारा किया जाने लगा। सभा में स्त्रियों के प्रवेश को रोक दिया गया। अथर्ववेद में 'सभा' और 'समिति' को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।

अधिकारी :- राजा को सहायता देने के लिए अधिकारियों के समूह की जानकारी मिलती है जिसे रत्निन कहा गया है। इसकी जानकारी शतपथ और तैत्तरीय ब्राह्मण से मिलती है।

⇒ न्याय एवं सैन्य प्रशासन :- सामान्यतः ऋग्वेद के समान ही था परंतु अब सैन्य व्यवस्था का सृजन हो रहा था। परंतु राजा अभी भी कबीलों पर ही निर्भर था।

⇒ राजस्व प्रशासन :- बलि नामक एक कर लिया जाने लगा। इससे जुड़े अधिकारी को संगृहीत कहा जाता था।

⇒ उत्तर वैदिक समाज :- संयुक्त परिवार, पितृसत्तात्मक परिवार की प्रथा थी। इस काल में महिलाओं की स्थिति में ह्रास हुआ। वे राजनैतिक कार्यों में भाग नहीं ले सकती थी।

- पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह प्रथा इस दौर में भी नहीं दिखाई देती है। बहुपत्नित्व एवं बहुपतित्व, नियोग प्रथा और विधवा विवाह के साक्ष्य मिलते हैं। दहेज की स्पष्ट चर्चा नहीं है।

⇒ वर्ण व्यवस्था :- सर्वप्रथम ऋग्वेद के 10वें मंडल में चारों वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन मिलता है →
(i) ब्राह्मण, (ii) क्षत्रिय (iii) वैश्य और (iv) शूद्र

ऊपर के तीन वर्णों को उपनयन संस्कार का अधिकार था। अर्थात् औपचारिक शिक्षा प्रारंभ करने के पूर्व संस्कार। शूद्रों को अछूत मानने की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी थी। वे गायत्री मंत्र का उच्चारण नहीं कर सकते थे।

- इस काल में गोत्र प्रथा स्थापित हुई। गोत्र शब्द का मूल अर्थ है - गोष्ठ या वह स्थान जहाँ समूचे कुल का गोधन पाला जाता था। परंतु बाद में इसका अर्थ एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न लोगों का समुदाय हो गया। तदनुसार

एक ही गोत्र वाले लोगों के बीच आपस में विवाह निषिद्ध हो गया।

- उत्तर वैदिक काल में समाज में आश्रम व्यवस्था नामक एक नवीन संकल्पना का उदय हुआ। इस व्यवस्था के तहत मनुष्यों की औसत आयु 100 वर्ष मानकर उनको चार भागों में बाँटा जाता है।

1) ब्रह्मचर्य - छात्रावस्था
2) ग्राहस्थ - गृहस्थावस्था
3) वानप्रस्थ - वनवासावस्था
4) सन्यास - सांसरिक जीवन से विरत होकर रहने की अवस्था।

⇒ अर्थव्यवस्था :— अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। जौ के साथ-साथ अन्य फसलों जैसे धावल, गेहूँ आदि का भी उल्लेख है। इस काल में बर्तन निर्माण में विशेषज्ञता आयी। सीमित स्तर पर व्यापार भी आरंभ हो गया था। धावल के लिए व्रीहि, सलि तथा गेहूँ के लिए गोधूम जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है।

⇒ धर्म :— उत्तरवैदिक काल में समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था के समान धर्म में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है। ऋग्वैदिक देवता इन्द्र एवं वरुण के महत्व में कमी आयी तथा प्रजापति के महत्व में वृद्धि हुई। प्रजापति उत्तरवैदिक कालीन सर्वोच्च देवता थे।

- विष्णु तथा शिव के महत्व में वृद्धि हुई। तथा इन्हें पालनकर्ता की स्थिति प्राप्त हुई। यज्ञ का महत्व बढ़ा, कई प्रकार के यज्ञ संपादित होने लगें। यज्ञ में पशुबलि का प्रचलन बढ़ा।

उत्तरवैदिक काल के अंत में ब्रह्म, आत्मा, तप, कर्म एवं पुनर्जन्म तथा मोक्ष जैसे विचारों के महत्व में वृद्धि हुई।

इतिहास विभाग

B.A. Sem-I (2018-2021)

Paper CC-II

# संथाल जनजाति का सामाजिक एवं धार्मिक जीवन

जनसंख्या की दृष्टि से संथाल - जनजाति झारखण्ड की सबसे बड़ी जनजाति है। ये मुख्य रूप से झारखण्ड के संथाल परगना प्रमंडल एवं धनबाद, गिरीडीह, हजारीबाग, चतरा, कोडरमा, पूर्वी- सिंहभूम आदि जिलों में निवास करते हैं। प्रजातीय दृष्टि से इन्हे प्रोटो- ऑस्ट्रोलॉयड श्रेणी में रखा जाता है। इनकी भाषा 'संथाली' एवं अपनी लिपि 'ओलचिकी' है। ये 12 गोत्र में विभाजित हैं, जो मुर्मू, हंसदा, सोरेन, हेम्ब्रम, किस्कू, बास्के, बेसरा, पौरिया, टुडु, बेडिआर, चोड़े एवं मरांडी हैं।

गोत्र के नाम या चिन्ह पशु, पक्षी या पौधे के नाम पर होता है। समगोत्रिय विवाह वर्जित है। संथाल जाति में बाल विवाह की प्रथा नहीं है, जबकि ~~जाति में बाल~~ विधवा विवाह प्रचलित है।

संथाल जनजाति में विभिन्न प्रकार के विवाहों का प्रचलन है जिसमे :-

1. सदायी बापला
2. गोलाहटी विवाह
3. घरदी जावांय
4. अपगिर बापला

वर्तमान समय में भी संथालो की पारंपारिक संस्थाएँ सक्रिय है। हत्या, डकैती जैसी गंभीर अपराधों को छोड़कर अन्य अपराधों का ~~निप~~ निर्णय इनकी पारंपरिक संस्थाएँ ही करती हैं। संथालों का प्रधान देवता 'सिंगबोंगा' या 'ठाकुर' है, इसे सृष्टि का रचयिता भी माना जाता है।

अन्य देवता जैसे ओडाक बोंगा, मरांग बुरू, जाहेर एरा, इत्यादि थे।

संथाल जन्तर - मन्तर, जादू - टोना आदि मे विश्वास करते हैं। इनका विश्वास है कि जन्तर - मन्तर से कई बीमारियाँ ठीक होती हैं।

संथालों का ~~प्रधान~~ प्रधान देवता 'सिंगबोंगा' या 'ठाकुर' होता है जिसे ये सृष्टि का रचयिता या निर्जन - नियन्ता

इतिहास विभाग

BA. SEM-I (2018-2021)

Paper-CC-I

हड़प्पा सभ्यता का नगर योजना

विश्व की प्राचीन नदीघाटी - सभ्यताओं में सिंधुघाटी या हड़प्पा की सभ्यता एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हड़प्पा सभ्यता पूर्ण विकसित नागरिक सभ्यता थी। पर आज हम एकमात्र पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर ही हड़प्पा सभ्यता के विविध पहलुओं का अध्ययन कर पाते हैं। हड़प्पा सभ्यता के विविध पहलू हैं जैसे :-

1. नगर निर्माण योजना → सिंधु - सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता यहाँ की नगर - निर्माण योजना है।
2. दो स्तरीय नगर - सिंधु - सभ्यता में दो स्तरीय नगरों के निर्माण का प्रमाण मिलता है - दुर्ग या गढ़ी और निचला शहर।
3. सड़कों का प्रबंध → नगर बनाते समय आवागमन की सुविधा के लिए सड़कों की समुचित व्यवस्था की गई थी।
4. जल एवं नालियों का प्रबंध → पानी की निकासी के लिए नालियों की अच्छी व्यवस्था की गई थी।
5. भवन निर्माण योजना → सिन्धु सभ्यता के नगरों के भवन योजना बद्ध तरीके से बनाए गए थे।
6. मोहनजोदड़ो में विशाल स्नानागार तथा अन्नागार इत्यादि भी मिली थी।

सिंधु सभ्यता की नगर योजना अपने आप में अद्वितीय है। संभवतः प्रत्येक क्षेत्र के लिए अलग - अलग प्रशासनिक केंद्र थे। जिनका प्रशासन वहाँ की नागरिक परिषद् के जिम्मे था।

सिंधुघाटी - सभ्यता के निवासियों ने स्वच्छता के लिए नालियों के प्रबंध पर जितना अधिक ध्यान दिया, उतना प्राचीन काल में अन्य किसी सभ्यता ने नहीं दिया।

सिंधु सभ्यता के अन्नागार का विशिष्ट महत्व है। जहाँ मेसोपोटामिया में अतिरिक्त उत्पादन या कर के रूप में वसूला जानेवाला अनाज मंदिरों में रखा जाता था, वहाँ सिंधु - सभ्यता में इसको एकत्र करने के लिए अन्नागार बनवाए गए थे।

इतिहास विभाग

B.A. Sem-II CC-IV

(2017 - 2020)

## झारखंड में 1857 का विद्रोह :

गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासन काल के दौरान हुआ 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। देश के अधिकांश भागों की तरह झारखण्ड भी इस विद्रोह की घटना से प्रभावित हुआ।

झारखण्ड के संदर्भ में 1857 के विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे :-

1. शासक वर्ग में असंतोष
2. जागीरदारों - जमींदारो मे असंतोष
3. जनजातियों में असंतोष
4. ब्रिटिश शासन तंत्र की अपर्याप्तता

झारखण्ड में सर्वप्रथम रोहिणी गाँव स्थित घुड़सवार सैनिकों ने 12 जून, 1857 को विद्रोह किया, इसके बाद झारखण्ड के अन्य क्षेत्रों मे जैसे - हजारीबाग, 30 जुलाई राँची 2 अगस्त, सिंहभूम 3 सितम्बर एवं पलामू 26 सितम्बर में विद्रोह का आरंभ हुआ।

संथाल परगना जिलान्तर्गत देवघर अनुमण्डल के रोहिणी नामक गाँव मे देशी स्थल सेना के 32वीं रेजीमेंट की एक कम्पनी का मुख्यालय था। राँची मे हजारीबाग के विद्रोही सैनिक 2अगस्त, 1857 को 2बजे दिन में विद्रोह किया।

झारखण्ड मे सर्वत्र विद्रोह की व्यापकता एक जैसी नहीं थी। संथाल परगना एवं हजारीबाग में यह मुख्यतः सिपाही विद्रोह था। लेकिन राँची, मानभूम व पलामू क्षेत्र में विद्रोह ने जन - विद्रोह का रूप धारण कर लिया था।

हालाँकि 1857 का विद्रोह अपने तत्कालिन लक्ष्य को पाने मे विफल रहा लेकिन इसका दूरगामी प्रभाव पड़ा। यह राष्ट्रभक्तों के लिए प्रेरणा स्रोत बना और इसने राष्ट्रीय चेतना के उदय एवं विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।